# नली-कली | सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की ओर एक क़दम

उमाशंकर पेरिओडी

## पृष्ठभूमि

नली-कली से मेरा परिचय 2007 में यादगीर ज़िले के सुरपुर नामक स्थान में *चाइल्ड-फ्रेंडली स्कूल इनिशिएटिव* (सीएफएसआई) के माध्यम से हुआ था। हम सरकारी स्कूलों के पूर्ण और समग्र सुधार के लिए एक ब्लॉक में कार्य कर रहे थे और इस पहल में नली-कली एक महत्त्वपूर्ण घटक था। लम्बे संघर्ष के बाद सुरपुर की टीम को यह बात समझ में आ चुकी थी कि बच्चों की शिक्षा के स्तर में सुधार तभी होगा जब शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया पर ध्यान दिया जाएगा और नली-कली पद्धति के माध्यम से यह सम्भव था।

नली-कली पद्धति इसलिए भी महत्त्वपूर्ण थी क्योंकि इसमें बहु-ग्रेड, बहु-स्तरीय तथा गतिविधि-आधारित शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया अपनाई जाती थी; अतः इससे शिक्षकों की अपेक्षित संख्या की कमी को लेकर जो महत्त्वपूर्ण बाधा सामने आया करती थी, वह भी सम्बोधित हो सकती थी। ज्यों-ज्यों हम इस पद्धति के माध्यम से कार्य करते गए, हमें विश्वास होता गया कि यह कार्यप्रणाली किसी भी अन्य प्रणाली की तुलना में अधिक सफल रूप से हर बच्चे तक पहुँचेगी और वह भी अपने मूल तत्व अर्थात गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ, जिसके आधार पर नली-कली पद्धति बनाई गई है। इससे सुरपुर के सभी 309 स्कूलों के प्रत्येक बच्चे तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाने की हमारी प्रेरणा को बढ़ावा मिला।

इसे वास्तविकता का रूप देने के लिए हमने मई के तीसरे सप्ताह में उत्तर-पूर्व कर्नाटक के छह ज़िलों में नली-कली शिक्षकों के लिए एक बड़े पैमाने पर ऑनलाइन क्षमता-निर्माण प्रक्रिया का आयोजन किया। कलबुर्गी के शिक्षा आयुक्त के कार्यालय के निमंत्रण पर एक सप्ताह के लिए ग्यारह हज़ार शिक्षकों ने इस क्षमता-निर्माण प्रक्रिया में भाग लिया। हमने सभी पहलुओं में उनकी सहायता की जैसे : परिकल्पना करना, योजना बनाना, स्रोत व्यक्तियों को प्रशिक्षित करना और डिजिटल प्लेटफॉर्म को सम्भालने के लिए फील्ड के छोटे समूहों की सहायता करना। दिलचस्प बात यह है कि सप्ताह भर का यह कार्यक्रम शिक्षकों और अधिकारियों को बहुत अच्छा लगा। शुरू में थोड़ी-सी समस्या हुई, लेकिन बाद में शिक्षक सक्रिय रूप से चर्चा और अन्तःक्रिया करने लगे।

यह एक उपलब्धि थी क्योंकि मुख्य रूप से यह सभी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक थे और उनमें से अधिकांश कर्नाटक के सर्वाधिक पिछड़े ज़िलों के ग्रामीण स्कूलों में कार्य करते थे। एक अध्ययन के अनुसार इस सफलता का कारण नली-कली की व्यवस्थित प्रणाली और उसकी स्पष्ट पद्धति थी। सामान्यतः इस प्रक्रिया में शिक्षकों के लिए निर्देश होते हैं और उन्हें शिक्षण-अधिगम सामग्री प्रदान की जाती है।

यह पद्धति सभी बच्चों को बुनियादी स्तर के अधिगम की गारण्टी देती है, जिसमें इस बात को भी महत्त्व दिया जाता है कि बच्चे, शिक्षकों और साथियों के समर्थन के साथ *ख़ुद पहल करते हुए अपनी गति के हिसाब सीखें।* इस पद्धति में एक सुगमकर्ता के रूप में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसलिए इस कार्यक्रम की सफलता के लिए नली-कली के प्रत्येक शिक्षक तक पहुँचना ज़रूरी था।

सुरपुर की टीम के लिए नली-कली का कार्य अत्यन्त गहन था क्योंकि हम तीन स्तरों पर कार्य कर रहे थे : पहला, कक्षा स्तर पर हर एक शिक्षक को साप्ताहिक ऑनसाइट मदद देना, दूसरा, किए गए कार्य की पाक्षिक समीक्षा बैठकें आयोजित करना और तीसरा, क्लस्टर और ब्लॉक स्तरों पर द्विमासिक शिक्षक क्षमता-निर्माण प्रक्रियाओं की योजना बनाना। टीम के लिए भी यह कार्य करते हुए सीखने की एक क्रिया थी, ठीक वैसे ही जैसा कि शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण में होता है। इसके चलते व्यक्तिगत रूप से सदस्यों का सीखना और योगदान काफ़ी अधिक था।

हमने 2004 में सीएफएसआई शुरू किया था और 2007 में हमारे पास बच्चों के अधिगम-स्तर का मूल्यांकन था। हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि परिणाम निराशाजनक थे क्योंकि मूल्यांकन से पता चला कि तीन साल बाद भी बच्चों के *सीखने के स्तर में कोई सुधार नहीं* हुआ था। ज़ाहिर है कि हमसे पूछताछ की गई। इतना निवेश करने के बाद भी कोई परिणाम कैसे नहीं निकला? या बच्चों के सीखने के स्तर में कोई सुधार क्यों नहीं हुआ! हमें थोड़ा धक्का लगा था। हमने अनुरोध किया कि हमें तीन वर्ष और दिए जाएँ, जो हमें दिए भी गए। अब अपेक्षाएँ बहुत स्पष्ट थीं।

**परिवर्तन करना**

हमने शिक्षकों की क्षमता निर्माण के लिए उनके साथ कार्य करने पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। एक बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि अपने विकास के लिए शिक्षकों को आसानी से संसाधन उपलब्ध नहीं होते थे। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों के पास ऐसे अवसर नहीं थे जहाँ वे एक साथ मिलकर चर्चा करें, अपने अनुभव और चुनौतियों को साझा करें, सुझाव प्राप्त करें और ख़ुद को उन्नत करें। हमने महसूस किया कि शिक्षकों के स्वैच्छिक शिक्षण समुदाय का निर्माण करना उनके पेशेवर विकास के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण था।

*शिक्षकों के फोरम और अधिगम केन्द्र*

इस प्रकार उन शिक्षकों के लिए *स्वैच्छिक शिक्षक मंच* (वॉलंटरी टीचर्स फोरम या वीटीएफ) का जन्म हुआ जो मिलकर चर्चा करने एवं अपने विचार और अनुभव साझा करने के लिए स्वयं का एक स्थान चाहते थे। इसके कारण शिक्षक अधिगम केन्द्र (टीचर लर्निंग सेंटर या टीएलसी) बनाए गए जो संसाधन-समृद्ध थे। वहाँ एक अच्छा पुस्तकालय, विज्ञान और गणित की शिक्षण-अधिगम सामग्री, कंप्यूटर व इंटरनेट कनेक्शन था। हालाँकि हमारा अनुभव बताता है कि शिक्षकों को संसाधन कक्षों की ओर आकर्षित करना आसान नहीं है, यहाँ तक कि समृद्ध रूप से सुसज्जित शिक्षक अधिगम केन्द्रों में भी। अस्तु, टीएलसी धीरे-धीरे लोकप्रिय होता गया और आज हमारे पास कर्नाटक के दस ज़िलों में पचास ऐसे शिक्षक अधिगम केन्द्र हैं।

*एक न्यूज़लैटर की स्थापना*

नली-कली को लेकर एक आलोचना यह की जाती थी कि मौजूदा संरचना में शिक्षकों को सोचने और चिन्तन करने के अवसर नहीं दिए गए थे। अपने अनुभवों के बारे में बताने से सोचने और चिन्तन करने में मदद मिलती है। चूँकि लेखन से लोगों को चिन्तन करने में और भी ज़्यादा मदद मिलती है, इसलिए हमने एक न्यूज़लैटर शुरू किया जिसमें शिक्षकों के कक्षा सम्बन्धी अनुभवों पर लेख शामिल किए जाते थे। प्रारम्भ में तो शिक्षकों ने केवल वही लिखा जो उन्होंने किया था, लेकिन धीरे-धीरे वे आगे बढ़े और इन अनुभवों पर चिन्तन करना शुरू किया। लेखन की वजह से वे अन्य सामग्रियों को भी पढ़ने के लिए प्रेरित हुए और इससे उन्हें अपने ज्ञान के क्षितिज का विस्तार करने में मदद मिली।

*मेले*

कक्षा और पाठ्यपुस्तकों से परे सीखने का एक और नवाचार भी किया गया। इसके तहत बच्चों ने विज्ञान, भाषा, गणित और सामाजिक विज्ञान की विभिन्न अवधारणाओं पर सामग्री तैयार की और अन्य बच्चों, अभिभावकों और समुदाय के सामने सार्वजनिक प्रस्तुतियाँ दीं। हालाँकि इससे प्रभावशाली परिणाम तो देखने में नहीं आए, किन्तु इन सभी चीज़ों ने संकीर्ण संरचना से परे जाने में मदद की और नली-कली प्रक्रिया के लिए पूरक का कार्य किया।

*परामर्श देना (mentoring)*

हृदय कान्त दीवान के सहयोग से नली-कली कार्यक्रम की गहन समीक्षा की गई जो हमारे कार्य के साथ निकटता से जुड़े हुए थे। उन्होंने नली-कली कार्यक्रम का विश्लेषण करने और उसे समझने में हमारी मदद की। इससे प्राप्त एक महत्त्वपूर्ण अन्तर्दृष्टि यह थी कि हमारी कार्यप्रणाली इतनी संरचित और केन्द्रीय रूप से संचालित थी कि इसमें शिक्षक के लिए कोई गुंजाइश नहीं थी। किसी शिक्षक के लिए सब कुछ इस तरह से पूर्वनिर्धारित और संरचित नहीं किया जा सकता जिसमें उसके सोचने, स्वतःस्फूर्त अनुक्रिया दिखाने और किसी विशेष बच्चे को किसी दिए गए सन्दर्भ में तभी के तभी सिखाने की कोई गुंजाइश न हो। इसमें शिक्षक निर्देशों का पालन करते और उन्हें जो बताया गया था, वही कर देते थे!

हृदय कान्त दीवान ने इस ओर ध्यान दिलाया कि इस तरह का तरीक़ा गतिविधि अधिक और शिक्षा कम है। इसलिए, हालाँकि यह एक अच्छी शुरुआत थी, लेकिन शिक्षकों को इससे आगे जाना था। उन्हें स्वतंत्र और रचनात्मक रूप से सोचना था, बच्चे और उसके सन्दर्भ को समझना था और उसके अनुकूल अनुक्रिया दिखानी थी। शिक्षकों को निर्देशों का अनुसरण करने और जो बताया गया है केवल वही करने के दायरे परे जाना होगा। उन्हें स्वयं सोचना होगा, इस प्रक्रिया पर चिन्तन करना होगा और नवाचार के माध्यम से हर बच्चे के अधिगम में सहायता करनी होगी।

और तब हमने शिक्षक-शिक्षा के लिए अवसर और स्थान बनाने की पूरी प्रक्रिया शुरू की। हमने शिक्षकों के साथ मिलकर कार्य करना शुरू कर दिया। हमने वीटीएफ, मेले और टीएलसी की अपनी पहलों को जारी रखने के साथ में शिक्षकों के साथ सह-शिक्षण किया, उन्हें समर्थन दिया और उनकी सहायता की। हमारा पूरा ध्यान शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पर था।

**एक लम्बी यात्रा**

जिस किसी ने भी शिक्षा के क्षेत्र में कार्य किया है, वह जानता है कि सुधार में बहुत अधिक समय लगता है। परिणाम देख पाना और प्रभाव डाल पाना धीमी प्रक्रिया है; यह एक लम्बी यात्रा है! इसने हमारे धैर्य की परीक्षा ली क्योंकि सुधार हो तो रहा था लेकिन उसकी गति बहुत धीमी थी। हमने सात

साल के निष्ठापूर्ण कार्य के बाद ही बच्चों के सीखने के स्तर में मामूली सुधार देखा। 2015 के बाद, अब हम यह देखते हैं कि एसएसएलसी के परिणामों में उत्तर-पूर्व कर्नाटक के अन्य सभी ब्लॉकों की तुलना में सुरपुर के विद्यार्थियों का प्रदर्शन लगातार बेहतर हो रहा है।

आज जब हम मुड़कर पीछे देखते हैं तो पाते हैं कि 1995 में कर्नाटक के मैसूर ज़िले के एच.डी.कोटे ब्लॉक में यूनिसेफ की सहायता से पायलट परियोजना के रूप में शुरू हुई नली-कली परियोजना एक चौथाई सदी से अस्तित्व में है। जिस व्यक्ति ने इस बहु-ग्रेड, बहु-स्तरीय, गतिविधि-आधारित शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को शुरू करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, वे थे श्री एम.एन.बेग, जो उस समय एच.डी.कोटे के ब्लॉक एजुकेशन अधिकारी थे। उन्होंने इस कार्यक्रम में रुचि रखने वाले कुछ शिक्षकों के साथ कार्य की शुरुआत की। वे रमा और पद्मनाभ राव द्वारा शुरू किए गए ऋषि वैली सैटलाइट एक्स्टेंशन प्रोग्राम का अध्ययन करने के लिए आन्ध्रप्रदेश के मदनपल्ली में ऋषि वैली स्कूल गए। यह प्रोग्राम ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावी प्राथमिक शिक्षा के एक मॉडल के रूप में उभरा था।

1995 में एच.डी.कोटे के इन शिक्षकों का कार्य सराहनीय है। वे प्रेरित और परिश्रमी लोग थे, जिन्होंने नली-कली के लिए आवश्यक हर चीज़ पर कार्य किया और उसे बनाया - पाठ्यक्रम, शिक्षण-अधिगम सामग्री, प्रक्रिया, समीक्षा और शोध। इन सबसे बढ़कर यह बात मुख्य थी कि उन्हें इस प्रयोग में गहरी आस्था थी और वे इसके प्रति आशावान थे।

*बाल-केन्द्रित दृष्टिकोण*

श्री बेग कहा करते थे कि नली-कली को एक आनन्दप्रद बाल-केन्द्रित दृष्टिकोण के अनुसार डिज़ाइन किया गया है, जिसमें कक्षा में बहु-ग्रेड, बहु-स्तरीय अधिगम पर ध्यान दिया गया था। अधिगम की विभिन्न शैलियों को ध्यान में रखते हुए इसमें आकलन के पारम्परिक/सामान्य तरीक़ों को अधिगम प्रक्रिया के सतत और व्यापक आकलन में परिवर्तित किया गया और इस तरह से अधिगम को एक ऐसा अनुभव बनाया गया जो भय और तनावमुक्त हो।

पाठ्यक्रम को छोटी और प्रबन्धनीय इकाइयों में पुनर्गठित किया जाता है जिन्हें मील का पत्थर कहते हैं। प्रत्येक विषय (भाषा, गणित, पर्यावरण अध्ययन) के लिए मील के पत्थर हैं। गतिविधियों और अधिगम-सामग्री के चरणों से गुज़रता हुआ बच्चा सीखने की सीढ़ी पर चढ़ता है। कक्षाओं को एक साथ रखा जाता है और इसमें अपने साथियों से सीखने की पर्याप्त गुंजाइश रहती है। बच्चे सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, वे अपनी स्थिति को पहचानते हुए किसी एक गतिविधि समूह कार्ड का चयन करते हैं और वे जिस गतिविधि समूह से जुड़े होते हैं उसमें शामिल होते हैं। यह इस प्रकार से हैं :

1. पूर्व-तैयारी
2. तैयारी
3. क्षमता तैयारी की गतिविधियाँ
4. अधिगम
5. अभ्यास
6. मूल्यांकन

शिक्षक पूरी कक्षा में घूमते हुए विभिन्न समूहों के बच्चों को विभिन्न प्रकार की सहायता प्रदान करते हैं। बच्चों द्वारा निर्मित सामग्री को कक्षा में बनाए गए अधिगम पण्डाल में प्रदर्शित किया जाता है।

**प्रगति और वर्तमान इतिहास**

25 साल की अपनी यात्रा के दौरान नली-कली कार्यक्रम धीरे-धीरे एच.डी.कोटे के कुछ ब्लॉकों से लेकर कर्नाटक के सभी उनचास हज़ार सरकारी स्कूलों में पहुँच गया है। 1995-96 में यूनिसेफ की मदद से एच.डी.कोटे के कुछ विद्यालयों में शुरू होने के बाद 1999-2000 तक यह कार्यक्रम ज़िले के सभी स्कूलों द्वारा अपनाया गया जिसे पुनः यूनिसेफ और विश्व बैंक का समर्थन मिला। 2004-05 में इसे राज्य के आठ अतिरिक्त ब्लॉकों के सभी छोटे स्कूलों में शुरू किया गया। 2007-08 तक इसे राज्य के उन सभी स्कूलों में कक्षा I और II को मिलाकर शुरू किया गया जहाँ विद्यार्थियों की संख्या तीस से कम थी। 2009-10 में कक्षा I, II और III को मिलाकर राज्य के सभी कन्नड़ा माध्यम स्कूलों में नली-कली की शुरुआत की गई। अब कर्नाटक के सभी स्कूलों में नली-कली है। कर्नाटक में अब नली-कली पर काफ़ी सोच-विचार किया जा रहा है और यह कई अध्ययनों का विषय बन गया है। इस पद्धति का मुख्य उद्देश्य यह है कि प्रत्येक बच्चा सीखने की प्रक्रिया में भाग ले और उसे सीखने में आनन्द आए।

**आगे का रास्ता**

सर्व-समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षक का प्रत्येक बच्चे तक पहुँचना बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसके निम्नलिखित फायदे हैं :

- बच्चे बिना किसी डर के प्रश्न पूछ सकते हैं और शिक्षक और साथी धैर्यपूर्वक उत्तर देते हैं।
- जिस किसी बच्चे को मार्गदर्शन की ज़रूरत होती है उसे अपने शिक्षकों या साथियों से यह सहायता मिल जाती है।

- बच्चों के कार्य को सुनियोजित अधिगम पण्डाल (बच्चों द्वारा तैयार की गई सभी सामग्रियों और अन्य शिक्षण सामग्री को लटकाने के लिए कक्षा के अन्दर बनाई गई अस्थायी छत) पर बहुत विशिष्टता के साथ दिखाया जाता है।
- शिक्षण सामग्रियाँ कक्षा में ही उपलब्ध होती हैं।
- विद्यार्थी भयमुक्त वातावरण में कार्य करते हैं।
- बच्चों की अनुक्रियाओं से पता चलता है कि उन्होंने शिक्षक द्वारा की गई व्याख्या और निर्देशों को समझ लिया है।
- बच्चों के घर की भाषाओं का उपयोग स्वतंत्र रूप से किया जाता है।

**निष्कर्ष**

हालाँकि नली-कली की 25 साल पुरानी यात्रा में बहुत से उतार-चढ़ाव आए हैं, फिर भी हमें लगता है कि यह यात्रा सफल रही है। हम अपने शिक्षकों को प्रशिक्षित करने में सक्षम हुए हैं; प्रशिक्षण मॉड्यूल, स्रोत व्यक्ति और सामग्री तैयार हैं, अब हमारी तत्काल आवश्यकता यह है कि अधिक शिक्षकों की नियुक्ति की जाए। *सभी के लिए शिक्षा* एक सरल तटस्थ विचार नहीं है; यह एक बहुत ही शक्तिशाली अवधारणा है जो कुछ अर्थों में अत्यधिक राजनीतिक भी है, जहाँ 'राजनीतिक' का अर्थ है प्रत्येक व्यक्ति को सशक्त बनाना और इसके लिए समाज के सबसे अधिक हाशिए पर रहने वाले वर्गों सहित सभी को शिक्षा उपलब्ध कराना।

इसके लिए हमें और अधिक परिश्रम करने के लिए तैयार रहना होगा क्योंकि केवल प्रत्येक बच्चे तक पहुँचना ही पर्याप्त नहीं है। उतनी ही महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि उसे किस तरह की शिक्षा प्रदान की जा रही है। सभी के लिए शिक्षा के विचार में यह बात सन्निहित है कि शिक्षा *गुणवत्तापूर्ण* हो, जिसके लिए हमें अभी काफ़ी लम्बा रास्ता तय करना है। हम नली-कली के माध्यम से लगभग सभी बच्चों तक भले ही पहुँच चुके हों, लेकिन क्या वे सारे बच्चे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं?

इसका जवाब देने के लिए अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन और टाटा ट्रस्ट द्वारा दो ज़िलों (एक कर्नाटक में और दूसरा महाराष्ट्र में) में 'लिटरेसी रिसर्च इन इंडियन लैंग्वेज' (LiRIL) अध्ययन किया गया; जिससे हमें निचली कक्षाओं में भाषा के अधिगम को सुधारने की दिशा में कुछ अन्तर्दृष्टि मिली। अध्ययन से पता चला है कि दोनों ज़िलों में भाषा का अधिगम औसत से कम है। नली-कली की पद्धति बाल-केन्द्रित है और सीखने की व्यक्तिगत प्रक्रियाओं में सुनने, बोलने, बातचीत करने, समूहों में कार्य करने और बच्चे को संवाद करने के लिए भाषा का उपयोग करने के अवसर देने जैसे आवश्यक कौशलों को अधिक स्थान नहीं मिलता। नली-कली में समूह-कार्य भी सीमित होता है क्योंकि बच्चा भले ही समूह में बैठा हो लेकिन वह व्यक्तिगत रूप से कार्य कर रहा होता है। मुझे लगता है कि यह पहलू बहुत महत्त्वपूर्ण है - कक्षा और उसकी प्रक्रियाएँ अधिगम के अनुकूल हों, बच्चों को दूसरों की बात सुनने के बहुत सारे अवसर मिलें और उन्हें ठोस अनुभवों से लेकर अमूर्त विचारों वाले विभिन्न विषयों पर बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। यह केवल विभिन्न समूहों, अवसरों और स्थितियों में होता है क्योंकि इन अन्तःक्रियाओं में बच्चों को बातचीत के लिए भाषा का उपयोग करना पड़ता है। LiRIL का यह अध्ययन एक ऐसी महत्त्वपूर्ण अन्तर्दृष्टि है जिसे हमें गम्भीरता से लेना होगा और उसे नली-कली पद्धति में शामिल करना होगा ताकि हम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को हर बच्चे तक पहुँचा सकें।

आज स्थिति 1995 से बहुत अलग है, जब एच.डी.कोटे में नली-कली प्रयोग शुरू हुआ था। इन वर्षों के दौरान, नली-कली पद्धति ने एक व्यापक आधार बनाया है - बुनियादी न्यूनतम स्तर की शिक्षा के साथ सभी बच्चों तक पहुँच। अब हमारे सामने यह चुनौती है कि शिक्षकों को सशक्त बनाया जाए ताकि वे बुनियादी ढाँचे और संरचना से परे जाकर और अपने शिक्षकत्व का प्रयोग कर *सभी* बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करा सकें।

**उमाशंकर पेरिओडी** अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन में कर्नाटक राज्य प्रमुख हैं। विकास के क्षेत्र में उन्हें तीस से भी अधिक वर्षों का अनुभव है। उन्होंने कर्नाटक के बीआर हिल्स में जनजातीय शिक्षा के साथ-साथ राष्ट्रीय साक्षरता अभियान में बड़े पैमाने पर योगदान दिया है। वे ज़मीनी स्तर के कार्यकर्ताओं और प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को, जिसे वे 'बेयरफुट रिसर्च' कहते हैं, प्रशिक्षण देते आ रहे हैं। वे कर्नाटक स्टेट ट्रेनर्स कलेक्टिव के संस्थापक सदस्य भी हैं। उनसे periodi@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल